रेणु की रचनाओं में लोक संस्कृति का चित्रण एक : अध्ययन

विनय पासवान
शोध छात्र
हिन्दी विभाग,
जगदम कॉलेज, छपरा

आंचलिक उपन्यास में किसी अंचल विशेष की कथा होती है, जिसमें उस अंचल की लोक–संस्कृति, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना का वर्णन होता है। 'आंचलिक : उपन्यास के सम्बन्ध में एक प्रश्न उठता है कि ये उपन्यास क्या ग्रामीण अंचल से ही संबद्ध होते हैं? यदि ऐसा है तो उदयशंकर भट्ट का 'सागर लहरें और मनुष्य' इसकी सीमा में कैसे आयेगा, क्योंकि उसमें बंबई जैसी महानगरी में रहने वाले मछुओं के जीवन का चित्रण है। मराठी उपन्यास 'चक्र' में बम्बई की चित, अचिहून–सा ह, अतः विभिन्न अंचलों के जन–जीवन को चित्रित करने के उद्देश्य से ही आंचलिक उपन्यास की रचना हुई। अपने मित्र मदन मोहन उपेन्द्र के साथ बात बात–चीत के क्रम में रेणु ने उनसे स्पष्ट शब्दों में कहा था कि फैशन के रूप में किया गया सृजन, नहीं होता और न ही वह पाठकों को भी प्रभावित करता है, जब कि आंचलिक रचनाएं दूर–देशान्तर में बैठे पाठकों को अपनत्व से जोड़ती हैं। ग्राम्य–जीवन की सहज रमणीयता का साधरणीकरण करती हैं तथा कला के स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्रस्तुत करती है। इस दृष्टि से आंचलिक उपन्यास कला–साहित्य को भी समृद्ध करनेवाली एक महत्त्वपूर्ण विधा है।

आंचलिक उपन्यासकार के द्वारा जिस जीवन का चित्रण किया जाना है, उसमें उसका अनुभव भी निहित होता है। 'जैसे नई कविता ने तीव्रता से सच्चाई से भोगे हुए, अनुभव की भट्टी में तपे हुए पलों को व्यंजित करने में ही कविता की सुन्दरता देखी, वैसे ही उपन्यासों के क्षेत्र में आंचलिक उपन्यासों ने

अनुभवहीन सामान्य या विराट के पीछे न दौड़कर अनुभव की सीमा में आने वाले अंचल विशेष को उपन्यास का क्षेत्र बनाया। अनुभव पर आधृत होने के कारण अंचल–विशेष को लेकर लिखा गया आंचलिक उपन्यास सार्वभौम हो जाता है। डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के शब्दों में, 'जब उपन्यासकार किसी अंचल, गाँव, कस्बे या मुहल्ले को परिवेश बनाकर वहाँ के लोगों के आचार–व्यवहार, जीवन–पद्धति, संस्कृति, लोक–भाषा, धर्म एवं दृष्टिकोण का सूक्ष्म वर्णन करता है, तो वह आंचलिक उपन्यास ही है। अंग्रेजी में आंचलिक उपन्यास को 'रिजनल नविल' कहा जाता है। अंग्रेजी साहित्य में हिन्दी से बहुत पहले इस प्रकार के उपन्यास की रचना हो चुकी थी। पाश्चात्य साहित्यकार वाल्टर एलेन ने परंपरित ग्रामीण चित्रण से अलग हटकर आंचलिक हटकर आचलिक चित्रण को प्रस्तुत करते हुए लिखा – 'Maria Edgeworth gave fiction a local habitation and a name, xxx she invented in other words, the regional novel, in which the very nature of the novelist's character is conditioned, receives its bias and expression, from ht fact that they live in a countryside-differentiated by a traditional way of life from other country-sides'.

हिन्दी में आंचलिक उपन्यास का प्रवर्तन रेणु से माना जाता है। समग्रतः आंचलिक उपन्यास को इन शब्दों में पारिभाषित किया जा सकता है – किसी अंचल–विशेष की प्रकृति, वहाँ के लोगों में प्रचलित रीति–रिवाज, लोक–जीवन, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन का चित्र स्थानीय बोली के प्रयोग द्वारा कथा–प्रस्तुतीकरण जिस उपन्यास में यथार्थ के धरातल पर अंकित किया जाता है, उसे ही आंचलिक उपन्यास कहते हैं। अंचल को समग्रता से आत्मसात् करनेवाला उपन्यासकार उस अंचल से न केवल परिचित होता है, वरन् उसका उसके प्रति एक सहज स्नेह भी होता है। अतः उसका चित्रण 'स्थानीय रंग' वाले चित्रण की तरह बाहरी सजावट तक ही सीमित नहीं रहता, वरन् अपेक्षाकृत गहरा और आन्तरिक होता है।

जब सन् 1954 ई० में देश में आपातकाल की घोषणा हुई तो तानाशाही सत्ता का विरोध करने के क्रम में उन्होंने स्थान–स्थान पर नुक्कड़ सभाओं, नुक्कड़ नाटकों और कवि–गोष्ठियों का आयोजन किया तथा पर्चे लिखे। अन्यायी सत्ता का विरोध करने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी पद्म श्री की उपाधि सरकार को लौटा दी और 300 रुपये मासिक सरकारी सहायता लेने से भी इन्कार कर दिया। जब केन्द्रीय सरकार ने चुनाव की घोषणा की तब नवोदित जनता पार्टी के पक्ष में इन्होंने घूम–घूमकर प्रचार किया और यही पार्टी विजयी हुई। जिस दिन लोकसभा में पार्टी के नेता का चुनाव था, उसी दिन वे पेप्टिक अल्सर से इस प्रकार बुरी तरह पीड़ित रहे कि उन्हें ऑपरेशन कराना पड़ा। वे उन्नीस दिनों तक बेहोशी की स्थिति में अस्पताल में पड़े रहे और 11 अप्रैल 1966 को सदा सदा के लिए इस संसार से विदा हो गये।

जहाँ तक रेणु के राजनीतिक जीवन की बात है, वे राजनीति में भाग लेकर किसी उच्च पद पर नहीं जाना चाहते थे। उनमें न तो यथार्थ–लिप्सा थी और न उन्हें यश की ही चाह थी। सच तो यह है कि उनकी राजनीति में कहीं से भी संकीर्णता का भाव न था, बल्कि उसमें उदारता की भावना थी और उनका उद्देश्य मानवता का कल्याण था।

राजनीति में भाग लेकर भी रेणु अपनी साहित्य–सर्जना में लगे रहे। जिस प्रकार एक साहित्यकार के रूप में आदर्श बने रहे, उसी प्रकार एक आंचलिक उपन्यास पर विचार करने के क्रम में हमने देखा है कि अपने परिवेश, अपने वातावरण, अपनी बोली, अपने रीति–रिवाज, अपनी जिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति आदि के प्रति जो लगाव तथा सहज आत्मीयता होती है, उसमें शहरीपन नहीं होता। ऐसे परिवेश के स्वाभाविक तथा चित्रण की आकांक्षा से ही आंचलिकता की भावना का उद्रेकीकरण हुआ आंचलिकता के प्रवर्तन का यही मूल कारण है।

आज हिन्दी में जिस रूप में आंचलिक उपन्यास को ग्रहण किया जा रहा है, उस रूप में न सही, मगर उससे मिलते–जुलते रूप में विश्व की विभिन्न
भाषाओं में आंचलिक उपन्यास देखे जा सकते हैं। इसे हिन्दी की ही विशिष्ट

विधा नहीं कही जा सकती।

पाश्चात्य साहित्य में आंचलिक उपन्यास को क्षेत्रीय उपन्यास की संज्ञा दी गयी है। यूरोप में खासकर इंगलैण्ड में थॉमस हार्डी (रिटर्न ऑफ द नटिभ, जार्ज इलियट (ऐडमबीड), शार्लेट ब्राण्टे (जेन आयर), मेरिया एजवर्थ किसेल रेकरेण्ट) आदि के उपन्यासों में आंचलिक या जनपदीय परिवेश के चित्रण हुए हैं। इसी प्रकार अमरीका में अर्नेस्ट हेमिंग्वे (द ओल्डमैन एण्ड द सी), मार्क नाइ ऑन दि मिसीसिपी) रूप में टॉल्सटॉय (द कॉसेक्स) आदि द्वारा जो उपन्यास लिखे गये, उनमें भी आंचलिक या जन–पदीप वातावरण के व्यापक चित्र उकेरे गये हैं।

भारतवर्ष में भी मराठी, गुजराती, तमिल, बंगला, कन्नड़, उड़िया, पंजाबी, तेलुगु आदि में कुछ उपन्यास लिखे गये हैं, जिनमें आंचलिकता दृष्टिगोचर होती है। मराठी के आंचलिक उपन्यासों में रघुनाथ बामन दिघे (पाणकला सराई), श्रीमती विभावरी शिरूरकर (बली), श्रीपेण्डसे (यशोदा हद्पार) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार गुजराती में रमणलाल देसाई ('ग्राम–लक्ष्मी', 'मोरलो'), गौरीशंकर जीशी (अजिता), झबेरचन्द मेघाणी (लोकचक्र), पन्नालाल पटेल (वलामणा) ने आंचलिक या जनपदीय उपन्यासों का प्रणयन किया। तमिल में रामजकृष्णन् (कुरिवर्तन), बंगला में ताराशंकर वंद्योपाध्याय (गणदेवता, जनपद), सतीनाथ भादुड़ी (ढोढाय चरित मानस), मणिक वंद्योपाध्याय (पद्मा नदीर माँझी), पंजाबी में करतार सिंह दुग्गल (आंदरां), सुरिन्दर सिंह नरुला (प्योपुत्तर), तेलुगु में कन्दुकूरि वीरेशलिंगम् (राजशेखरचरित) ने आंचलिक उपन्यास लिखे।

उपरिलिखित तथ्यों से स्पष्ट है कि आंचलिक उपन्यास हिन्दी की विशिष्ट देन नहीं है, बल्कि अन्य भाषाओं में भी वह उपलब्ध है। अब हम हिन्दी के आंचलिक उपन्यास के प्रवर्तन पर विचार करेंगे। चित्रण की समग्रता की दृष्टि से हिन्दी में आंचलिक उपन्यास बहुत कम लिखे गये हैं। किन्तु ऐसे उपन्यास बहुत हैं, जिनमें किसी अंचल–विशेष की कुछ विशिष्ट जीवन–झांकियाँ मिल जाती हैं और इसी आधार पर

आंचलिक उपन्यासों की प्रारम्भिक स्थिति के सम्बन्ध में विभिन्न मत सामने आते हैं। जिन्हें प्रस्तुत करने

से पूर्व यह स्पष्ट कर देना युक्तिसंगत प्रतीत होता है कि आंचलिक उपन्यास हिन्दी में उपन्यास की आधुनिकतम प्रवृत्ति के रूप में ही स्वीकृत होने चाहिए, जिसका श्रेय पूर्णतः 'मैला आँचल' (रेणु) को है। यूं रेणु के पूर्व नागार्जुन के उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे, पर 'मैला आँचल' द्वारा ही 'आंचलिक उपन्यास'

नाम की विशिष्टता प्रकाश में आयी।' आंचलिक उपन्यासों की आरंभिक स्थिति

के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न विचार हैं। डॉ० प्रताप नारायण टंडन,

डॉ० सुरेश सिन्हा, डॉ० कांति वर्मा, डॉ० नवल किशोर प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ० प्रकाश वाजपेयी आदि समीक्षकों ने 'शिवपूजन सहाय लिखित 'देहाती दुनिया' एवं वृन्दावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों को आरंभिक आंचलिक उपन्यास की कोटि में रखा है। इसी प्रकार मन्नन द्विवेदी लिखित 'रामलाल और गोविन्दबल्लभ पंत लिखित 'मदारी' में भी ग्रामीण वातावरण और ग्राम्य–जीवन के चित्र को देखते हुए अनेक आलोचकों ने इन उपन्यासों में भी आंचलिकता की गंध देखी है। डॉ० गणेशन का मत है कि "गोदान हमारा सबसे अधिक यथार्थवादी उपन्यास है, और आज तक और कोई उपन्यासकार उसका अतिक्रमण नहीं कर सका है। केवल रेणु कुछ विषयों में तनिक आगे बढ़ सके हैं।''

जो भी हो, अनेक विद्वानों ने रेण लिखित 'मैला आँचल' और परती : परिकथा' तथा नागार्जुन लिखित 'बलचनमा' को पूर्ण आंचलिक उपन्यास की संज्ञा दी है।

यहाँ हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि 'गोदान' या 'देहाती निया' अथवा वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास आंचलिक उपन्यास नहीं कहे जा सकते। 'गोदान' भी आंचलिक उपन्यास नहीं है क्योंकि ग्राम–जीवन की कथा होते हुए भी 'गोदान' का नायक होरी भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता है, उसमें आंचलिक कथा का अभाव है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि 'प्रेमचन्द ग्राम–कथाकार हैं, रेणु की तरह आंचलिक

कथाकार नहीं। ग्राम–कथा अधिक व्यापक भावभूमि समेटती हैं और आंचलिक कथा सीमित क्षेत्र–विशेष की कथा

होती है। 'गोदान' की समस्याएँ भी अंचल–विशेष की न होकर सामान्य जीवन

की सामाजिक–आर्थिक समस्याएँ हैं। फिर गोदान की ग्रामीण (बेलारी गाँव) कथा के साथ–साथ मेहता मालती की शहरी (लखनऊ) कथा भी चलती है, सामूहिक चरित्रांकन का अभाव है, लोक–भाषा की जगह खड़ी बोली का व्यवहार है, गोदान का 'बेलारी' ग्राम उत्तर प्रदेश के सामान्य ग्रामों का प्रतीक है, जिसकी अपनी कोई भौगोलिक विशिष्टता नहीं – इस प्रकार 'गोदान' यथार्थवादी उपन्यास तो है, पर आंचलिक नहीं। अतः आंचलिकता के सन्दर्भ में रेणु के साथ प्रेमचन्द अथवा 'मैला आँचल' के साथ 'गोदान' की तुलना समीचीन नहीं। यथार्थ की व्याख्या दोनों में है, पर क्षेत्र अलग–अलग हैं। उद्देश्य पृथक्–पृथक् है।

संदर्भ :–

1. रेणु : संस्मरण और श्रंद्धांजली – नवणीत प्रकाशन
2. डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर : परिषद् पत्रिका, फणीश्वरनाथ रेणु विशेषांक, जुलाई दिसम्बर 2009
3. प्रो0 –विश्वनाथ प्रसाद : कला एवं साहित्य – प्रवृति और परम्परा
4. वहीं
5. त्रिभुवण सिंह : साहित्य निबंध रत्ना पब्लिकेशन वाराणसी
6. डॉ0 राजकुमारी खेड़िया : आंचलिक हिन्दी कथा साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु के देन।